ऑडियो नं. 26 कम्पिल अ.वा. 01.04.92

(सिर्फ बीकेज़ और पीबीकेज़ के लिए)

ओम्शांति। ये है 01.04.92 का अव्यक्त बापदादा का क्लास। हेडिंग दिया है– **"उड़ती कला का अनुभव करने के लिए दो बातों का बैलेंस– ज्ञानयुक्त भावना और स्नेहयुक्त योग"।**

आज बापदादा अपने स्नेही भावनामूर्त आत्माएँ और ज्ञानस्वरूप योगी आत्माओं को देख रहे हैं। दोनों प्रकार की आत्माएँ बाप की प्रिय हैं और दोनों ही बाप से अपने–2 यथा स्नेह और भावना उसी प्रमाण प्रत्यक्ष फल वर्से के अधिकारी ज्ञानस्वरूप योगी तू आत्माएँ अपने शक्ति प्रमाण बाप के समीप समान सर्व शक्तियों की अनुभूति का वर्सा प्राप्त कर रही हैं। कौन? ज्ञानस्वरूप योगी आत्माएँ। भावनामूर्त के लिए नहीं बताया। हैं तो दोनों ही प्राप्ति स्वरूप; लेकिन दोनों की प्राप्ति में अंतर है। स्नेह और भावनामूर्त बच्चे सदा भावना के कारण याद में रहते हैं। याद में रहने का कारण है– भावना। बाप से प्यार का अनुभव करते हैं। शक्ति का भी अनुभव भावना के फल के स्वरूप में करते हैं; लेकिन सदा और सर्व शक्तियाँ नहीं; क्योंकि भावना दिल की चीज़ है और ज्ञान? सिर्फ दिमाग़ की बच्चों की बात नहीं बताई। भावनायुक्त और ज्ञानयुक्त दोनों प्रकार के बच्चे। योगी तू आत्मा और ज्ञानी तू आत्मा और भाव से भी भरे–पूरे। तो जो ज्ञानयुक्त नहीं हैं सिर्फ भावनायुक्त हैं, वो सदा और सर्वदा के लिए सर्वशक्तियाँ प्राप्त नहीं कर पाते। ज्ञान स्वरूप योगी आत्माएँ सदा सर्वशक्तियों की अनुभूति द्वारा सहज विजयी बनने का विशेष अनुभव करते हैं। समानता का अनुभव करते हैं। तो दोनों प्रकार के बच्चे वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं।

सदा अचल, अटल स्थिति का अनुभव योगी तू आत्माएँ ही करती हैं। स्नेही आत्माएँ वा भावना स्वरूप आत्माएँ भावना से, स्नेह से आगे बढ़ रहे हैं; लेकिन वे सदा विजयी नहीं होते; क्योंकि भावना उसमें जब तक दिमाग़ की शक्ति जिससे ज्ञान सेट होता है–दिल और दिमाग़ दोनों का बैलेंस नहीं होगा–तो पूरी प्राप्ति नहीं होती। स्नेही आत्माओं के मन में, मुख में सदा बाबा–2 है, इस कारण समय प्रति समय सहयोग प्राप्त होता रहता है। भावना का फल समय प्रमाण बाप द्वारा प्राप्त हो ही जाता है; लेकिन समान बनने में ज्ञानी–योगी तू आत्माएँ समीप हैं। भावना वाली आत्माएँ उतनी समीप नहीं हैं। इसलिए लक्ष्य रखो– भावना और ज्ञानस्वरूप बनने का। दिल का भी और दिमाग़ का भी बैलेंस रहे। जितनी भावना हो उतना ही ज्ञान स्वरूप भी हो। सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान ये भी सम्पूर्णता नहीं है। क्या? कोई–2 ऐसे भी होते हैं– बस ज्ञानी ही ज्ञानी। रावण भी ब्राह्मण था, वो भी ज्ञानी था; लेकिन भगवान के प्रति भावना बिल्कुल नहीं थी। तो वो भी बेकार, उसका वो ज्ञानी होना व्यर्थ हुआ। तो सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान ये भी सम्पूर्णता नहीं है। ज्ञानयुक्त भावना। सिर्फ भावना में नहीं बहना है; लेकिन भावना भी ज्ञानयुक्त, समझ पूर्वक। स्नेह सम्पन्न योगी आत्मा– ये दोनों का बैलेंस सहज उड़ती कला का अनुभव कराते हैं।

बाप समान अर्थात् दोनों की समानता। बाप समान। बाप तो दो हैं बेहद के– एक आत्माओं का बाप और दूसरा मनुष्यों का बाप– प्रजापिता। तो समानता किसमें? कौन–से बाप में भावना? दिल? (किसी ने कहा– दिल तो निराकार में।) दिल निराकार में? शरीर में दिल का स्थान कहाँ होता है? और दिमाग़ का स्थान कहाँ होता है? दिल और दिमाग़। दिमाग़ का स्थान कहाँ होता है? ऊपर। और दिल का स्थान? नीचे। तो शिव ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा जिसे कहते हैं, उसमें दिल कहेंगे? वो बुद्धिमानों की बुद्धि है। जिसके पास जो चीज़ नहीं है, उसको वही चीज़ प्रिय है। तो कौन–सा बच्चा विशेष प्रिय है? ब्रह्मा; क्योंकि उसमें दिल विशेष है। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला कि **"बुद्धिमानों की बुद्धि बाप को बुद्धि वाले बच्चे प्रिय नहीं हैं। कौन–से प्रिय हैं? दिलवाले बच्चे विशेष प्रिय हैं।"** क्योंकि जो काला होता है उसे गोरा प्रिय होता है, गोरा होता है उसे काला प्रिय होता है। शिवबाबा तो है ही बुद्धिमानों की बुद्धि, वो किसी की बुद्धि के अहंकार को क्या देखेगा! लेकिन यहाँ बात बताई कि दोनों होने चाहिए। दिल और दिमाग़ जिन बच्चों में है, वो बाप समान होंगे। तो कौन–से बाप समान होंगे? ज़रूर साकार बाप मनुष्य आत्माओं का पिता; उसमें दिल भी है तो दिमाग़ भी है। क्योंकि उसमें दिमाग़ों का दिमाग़ी, बुद्धिमानों की बुद्धि बाप की भी प्रवेशता है। और दिलवाली जो आत्मा है कृष्ण की, वो भी उसमें प्रवेश होकर पार्ट बजाती है। तो–दोनों का कॉम्बिनेशन, जो हमारे मात–पिता हैं। तो बाप समान अर्थात् दिल और दिमाग़ दोनों की समानता।

सेवा में वर्तमान समय भावनास्वरूप आत्माएँ ज़्यादा आती हैं। कौन–सी आत्माएँ कम आती हैं? वर्तमान समय बुद्धिवादी आत्माएँ ज़्यादा सेवा में नहीं आतीं। भावना वाली आत्माएँ ज़्यादा आती हैं। ये आत्माएँ भी स्थापना के कार्य में, चाहे आदि सनातन देवता धर्म की स्थापना में, चाहे राज्य की स्थापना में दोनों में आवश्यक हैं। कौन–सी आत्माएँ? भावना स्वरूप आत्माएँ। दिलवाली आत्माएँ। धर्म की स्थापना में भी जो देवी–देवता सनातन धर्म है और राज्य की स्थापना में भी आवश्यक तो हैं। इसलिए अभी समय प्रमाण ज्ञानी–योगी तू आत्माओं की आवश्यकता और ज़्यादा है। क्योंकि भावना स्वरूप आत्माएँ आगे के समय में वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के कारण और भी सहज आनी हैं। क्यों? उनका आना सहज क्यों हो जाएगा? क्योंकि दिन प्रति दिन इस दुनिया से आत्माओं को वैराग्य आता जावेगा। और

ज्ञानी तू आत्माओं की तो संख्या ही थोड़ी है। इसलिए सेवा के लक्ष्य में अटेंशन ज्ञानी–योगी तू आत्माओं की तरफ़ ज़्यादा होना चाहिए। क्यों? वर्तमान समय ज़्यादा अटेंशन बाप समान बनने वाली आत्माओं के प्रति क्यों होना चाहिए? क्योंकि अब है माला के प्रत्यक्ष होने का समय। तो जो समय विशेष होता है उसका लाभ उठाय लेना चाहिए। जब माला तैयार हो गई फिर बाप समान आत्माओं का संगठन तो संगठित हो जाएगा। फिर वो समय निकल जाएगा।

तो सेवा के लक्ष्य में अटेंशन ज्ञानी और योगी तू आत्माओं की तरफ ज़्यादा चाहिए। ऐसी आत्माओं की वृद्धि आवश्यक है। समझा? ऐसे नहीं समझो कि संख्या बहुत बढ़ रही है। अभी तक क्या किया है? मेले किए, सम्मेलन किए, कॉन्फ्रेंस की, तो इनसे वृद्धि किसकी हुई? संख्या की वृद्धि हुई या क्वालिटी की आत्माओं की वृद्धि हुई? संख्या वृद्धि हुई। बाबा की जिन बच्चों में आस है, जिनके द्वारा राजधानी स्थापन होनी है, जो विश्व का राज्य चलाने वाले अधिकारी बच्चे होंगे, उन आत्माओं की तरफ अभी सेवा में किसी का अटेंशन नहीं जा रहा है। तो ज्ञानी तू और योगी तू आत्माओं की तरफ ज़्यादा अटेंशन चाहिए। समझा? ऐसे नहीं समझो की संख्या बहुत बढ़ रही है; लेकिन ऐसी बाप समान सर्व शक्तियों की अनुभूति वाली आत्माएँ तैयार करो।

राजधानी की वृद्धि तो अच्छी हो रही है; क्योंकि राजधानी में ज़्यादा संख्या किसकी होती है? राजधानी में तो प्रजा ही ज़्यादा होती है; लेकिन विश्व परिवर्तक आत्माएँ वो दोनों स्वरूप के बैलेंस वाली आत्माएँ निमित्त बनती हैं। दोनों स्वरूप कौन–से? भावना वाली और ज्ञानयुक्त। क्योंकि विश्व परिवर्तन के लिए बहुत सूक्ष्म शक्तिशाली स्थिति वाली आत्माएँ चाहिए। जिनकी मनन–चिंतन और मंथन की गति अति सूक्ष्म और तीखी हो। जो अपनी वृत्ति द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन कर सकें; क्योंकि जैसा स्वयं का वायुमण्डल होगा, वृत्ति होगी अपने संसर्ग और सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी वैसा ही मोल्ड कर सकेंगे।

स्वयं स्नेह वा भावुक आत्मा स्वयं में तो बहुत अच्छे चलते हैं; लेकिन वह स्नेह वा भावना विश्व के प्रति नहीं; स्वयं प्रति वा कुछ समीप आत्माओं के प्रति होती है। विश्व के प्रति क्यों नहीं होती? क्योंकि इतना ज्ञान उनके अंदर नहीं है। बेहद की सेवा वा विश्व प्रति सेवा बैलेंस वाली आत्माएँ बेहद की सेवा या विश्व सेवा ये दोनों की बैलेंस, अपना और विश्व का, स्वपरिवर्तन और विश्व का परिवर्तन, स्व की सेवा और विश्व की सेवा ये बैलेंस चाहिए। ऐसी बैलेंस वाली आत्माएँ ही विश्व का परिवर्तन कर सकती हैं। और भावना वाली आत्माएँ ज़्यादा किधर मुड़ जाती हैं? अपनी ओर या अपने संसर्ग–सम्पर्क में आने वाली आत्माओं की तरफ़। इससे ज़्यादा उनका रुझान नहीं होता। विश्व प्रति नहीं, स्वयं प्रति वा कुछ समीप आत्माओं के प्रति उनका रुझान होता है। बेहद की सेवा वा अपना शक्तिशाली मंसा शक्ति द्वारा, शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा विश्व की सेवा होती है। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं; लेकिन औरों को शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तन कर सकते हो। तो ऐसी भावना और ज्ञान, स्नेह और योगयुक्त ऐसी आत्माएँ बने हो? ऐसी आत्माएँ बने हो कि स्नेही भावुक आत्माओं को देख करके सिर्फ खुश हो रहे हो? कल्याणकारी बने हो या बेहद विश्व–कल्याणकारी बने हो? तो ये अपने में चेक करो।

कल्याणकारी माना? सिर्फ संदेश देने वाले। और बेहद विश्व कल्याणकारी कौन बनेंगे? सम्पूर्ण ज्ञानी की नज़र कहाँ होगी? सारे विश्व पर नहीं, सारे विश्व के जो बीज हैं सारे विश्व के जो कंट्रोलर हैं, जो माला के संगठन में प्रत्यक्ष होने वाले हैं, उन आत्माओं विशेष के ऊपर उनकी ज्ञान के आधार पर नज़र होगी। तो चेक करो सिर्फ कल्याणकारी बने हो या बेहद विश्व कल्याणकारी बने हो? ब्रह्मणों के लिए बेहद विश्व कौन–सा हुआ? 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं का विश्व या आधारमूर्त आत्माओं का विश्व या उन जड़ों के भी जो बीज हैं, हर धर्म के बीज वो बेहद का विश्व है? क्योंकि तीन विश्व हैं। तीन दुनिया बन चुकी हैं। एक वो दुनिया जो 500 करोड़ की दुनिया है। दूसरी बेसिक नॉलेज की दुनिया और तीसरी एडवांस नॉलेज में आने वालों की दुनिया अर्थात् बीजरूप आत्माओं की दुनिया, ये है तीसरी दुनिया। तो 500 करोड़ की दुनिया के चरित्र, स्वभाव–संस्कार अगर देखना हो तो शॉर्ट में ब्राह्मण परिवार के अंदर देख सकते हैं। इसलिए बाबा ने बोला था– **"बड़े ते बड़े भ्रष्टाचारी देखना हो तो कहाँ देखो? यहाँ देखो और बड़े ते बड़े श्रेष्ठाचारी देखना हो तो यहाँ देखो ब्राह्मणों की दुनिया में।"**

इसी तरीके से बेसिक नॉलेज से भी ऊपर जो एडवांस नॉलेज की बीजरूप आत्माएँ हैं वो तो फिर सारी दुनिया के ही बाप हैं। आधारमूर्त ब्राह्मणों के भी वो बाप हैं। और उनमें सब प्रकार की बीजरूप आत्माएँ हैं। हर धर्म के बीज समाए हुए हैं। तो दुनिया का छोटा सैम्पल देखना हो तो 108 आत्माओं की माला के अंदर सारी दुनिया का स्वभाव–संस्कार और पार्ट का उदाहरण देखा जा सकता है; लेकिन देखेगा कौन? भावना वाली आत्माएँ देखेंगी या ज्ञानयुक्त भावना के आधार पर चलने वाली आत्माएँ देखेंगी? ज्ञानयुक्त आत्माएँ, योगी तू आत्माएँ, ज्ञानी तू आत्माएँ; क्योंकि योग भी बिना भावना के नहीं हो सकता। भावना दिल की चीज़ है दिमाग़ की चीज़ नहीं और दिल के बगैर स्नेह पैदा नहीं होता। क्या? किसी से हम योग लगाना चाहें–योग माने लगन, लगाव, प्रीति–स्नेह पैदा करना चाहें; अगर दिल नहीं है और–स्नेह करना चाहते हैं तो होगा? जब दिल ही नहीं है तो स्नेह कहाँ से होगा।

इसलिए एडवांस पार्टी की आत्माओं के लिए बोला है, जो उनमें से ज़्यादातर सिर्फ बुद्धिवादी हैं उनके लिए कि **"मजबूरी से आपस में मिले हुए हैं; लेकिन स्वभाव–संस्कार से आपस में मिले हुए नहीं हैं।"** तो चेक करो कि कल्याणकारी बने हो या बेहद विश्व के कल्याणकारी बने हो? अगर बेहद विश्व के कल्याणकारी होंगे, तो मजबूरी से मिला हुआ होना ये ठीक नहीं है। तो क्या करते हो? क्या रिज़ल्ट है? बहुत बड़ा ग्रुप ले आए इसमें ही खुश हो रहे हो? वहाँ भी ये बात लागू होती है तो यहाँ भी ये बात लागू होती है। बीज छोटा होता है और वृक्ष विस्तार में होता है। बीज में सार छुपा हुआ होता है और विस्तार में बीज छिप जाता है। जब वृक्ष पूरा बड़ा हो जाता है, सूख जाता है तो बीज फिर प्रत्यक्ष होता है। तो जहाँ सार है वहाँ विस्तार नहीं और जहाँ विस्तार है वहाँ सार छिप जाता है। तो चेक करो कि क्या करते हो? क्या रिज़ल्ट है?

बापदादा ने सुनाया कि बाप को प्यारे दोनों ही हैं। दोनों प्रकार की आत्माओं को देख बापदादा खुश होते हैं। दिल नीचे है, ब्रह्मा का जो पार्ट है वो दिल का पार्ट है। बच्चे बाबा के सामने आ जाते थे तो बाबा खुशी में बाग़–2 हो जाते थे। बच्चे को परखने की बात उतनी नहीं थी। कोई भी बच्चा बाबा के सामने आया, गोद में आया तो बाबा बस गदगद हो गए। अपना सबकुछ उस बच्चे के ऊपर न्योछावर करने के लिए तैयार रहते थे। तो ये हुई भावना; लेकिन दिमाग़ सहित जो भावना होगी, ज्ञानयुक्त जो भावना होगी, वो ऐसी नहीं होगी। परखना, परखने के बाद निर्णय करना और निर्णय करने के बाद फिर बाप बच्चों के ऊपर सरेंडर होते हैं और बच्चे बाप के ऊपर सरेंडर।

तो बाप के प्यारे तो दोनों ही हैं– दिलवाले भी, (किसी ने कहा– दिमाग वाले।) सिर्फ दिमाग़ वाले नहीं। यहाँ सिर्फ दिमाग वालों की बात नहीं कर रहे हैं बाबा। ज्ञानयुक्त भावना वाले बच्चे। योगी तू आत्माएँ। क्योंकि जिस योगी में भावना नहीं है, उसका वो योग व्यर्थ है; क्योंकि रावण भी शिव का उपासी था। शिव को याद करता था; लेकिन उसमें भावना नहीं थी, क्योंकि बिना शरीरधारी के भावना नहीं हो सकती। दिलवाले के बगैर भावना नहीं हो सकती। सिर्फ बिंदु याद किया, तो बिंदु को याद करने से बुद्धि सूक्ष्म हो जाएगी, दिमाग़ बड़ा हो जाएगा; लेकिन दिल के अंदर श्रेष्ठ भावना रहे, सारे विश्व के कल्याण के प्रति भावना रहे ये नहीं हो सकेगा। तो दिल और दिमाग़ दोनों का बैलेंस चाहिए। तो–बाबा ने यहाँ सिर्फ दिमाग़ी बच्चों को नहीं लिया। किन बच्चों का कम्पेरिज़न कर रहे हैं? जो दिलवाले बच्चे हैं, सिर्फ भावना वाले। और दूसरे दिलवाले भी हैं तो दिमाग़ वाले भी हैं। तीसरे प्रकार के उन बच्चों को जो सिर्फ दिमाग़ वाले हैं– उनको छोड़ दिया, उनकी बात नहीं हो रही है। तो दोनों प्रकार की आत्माओं को देख बापदादा खुश होते हैं। दिलवाले भावना वाले बच्चों को भी देख करके खुश होते हैं और ज्ञानयुक्त भावना वाले बच्चों को भी देख करके खुश होते हैं। फिर भी स्नेही आत्माएँ बन बाप को अपना तो बना लिया। किन्हों ने? भावना वाले बच्चों ने। पहचान लिया, वर्से के अधिकारी बन गए। कोटों में कोई की लाइन में आ गए।

कौन–से बच्चे कोटों में कोई की लाइन में आ गए? बच्चों की बात है। बच्चे तो पहले ही बन चुके; लेकिन अब 92 में क्या विशेषता हुई? सन् 1992 में बोला कि वो बच्चे करोड़ों पुरुषार्थ करने वाले बच्चों में से कोटों में कोई ऐसे बच्चे हैं जो उस लाइन में आ चुके हैं, वर्से के अधिकारी बन चुके हैं। उस लाइन में आ गए। अपने ठिकाने पर पहुँच गए। कौन–से ठिकाने पर पहुँच गए? ठिकाना माना? स्थान। सिर्फ बुद्धि का स्थान? दुनिया की आत्माएँ भटक रही हैं, ढूँढ रही हैं। कभी कहाँ तक पहुँचती हैं कभी कहाँ पहुँचती हैं। फिर निर्णय करती हैं यह नहीं, यह नहीं, यह नहीं। और आप? आप निर्णय पर पहुँच गए। भटकने की स्टेज पर नहीं हो। आप ठिकाने पर पहुँच गए। तन के भटकने से ऐसे नहीं बुद्धि को ही ठिकाना मिल गया कि शिवबाप परमधाम का रहने वाला है तो अब बुद्धि कहीं इधर–उधर भटकाने की बात नहीं रही। अरे! बुद्धि स्थिर हो ही नहीं सकती, जब तक बुद्धि को सही ठिकाना नहीं मिला है। अब सही ठिकाना है; क्योंकि मुरली में बोला है– **"सत्गुरू निन्दक ठौर न पावें।" (मु. 11.6.64 पृ.1 मध्य)** ठौर माने ठिकाना। सत्गुरू मिला दलाल। तो दलाल साकार हुआ या निराकार हुआ? दलाल तो साकार ही हुआ और साकार के पास ठिकाना भी कैसा होगा? ठिकाना भी साकार होगा। निराकार परमधाम की बात नहीं है। जब विनाश होगा तो जो निन्दा कराने वाले बाप के बच्चे हैं, वो कयामत के समय में बाप के ठिकाने पर नहीं रह सकेंगे, जो बाप ठिकाना तैयार करता है। दूर विनाशी धर्मखण्डों में सेवा के लिए उनको जाना पड़ेगा, जहाँ मौत ही मौत चारों तरफ बरप रही होगी। लेकिन जिन बच्चों ने पहचान लिया, उनके लिए बोला कि तन के भटकने से बच गए, मन के भटकने से बच गए। इसलिए खुश होते हो ना! तो बच्चे भी खुश और बाप भी खुश। खुशकिस्मत, ऐसे बच्चे बन गए; क्योंकि दुनिया के हिसाब से डायरैक्ट बाप के बनने वाले ऐसे खुशकिस्मत वाले बच्चे बन गए? दुनिया गॉडफादर–2 तो कहती है; लेकिन गॉडफादर किसके थ्रू? क्राइस्ट के थ्रू। या भगवान–2 करती है; लेकिन किसके थ्रू? देहधारी धर्मगुरुओं के थ्रू, मनुष्य गुरुओं के थ्रू, ब्राह्मणों की दुनिया में दीदी, दादी, दादाओं के थ्रू। और यहाँ तो दुनिया के हिसाब से डायरैक्ट बाप के बनने वाले; किसी के थ्रू बनने वाले नहीं। थ्रू बनने वाले हैं वो वर्सा भी थ्रू पावेंगे। डायरैक्ट बाप का वर्सा नहीं प्राप्त कर सकते; क्योंकि डायरैक्ट बाप का वर्सा है ही रुद्रमाला। रुद्रमाला के मणके बनना ये खुशनसीबी है; क्योंकि ये वो बच्चे हैं जो ज्ञानी तू आत्माएँ हैं।

तो जो डायरैक्ट बाप के बनने वाले बच्चे हैं, वो दुनिया के हिसाब से देखो कितनी साधारण आत्माएँ हैं। 5 सौ करोड़ की दुनिया में साधारण और विशेष का हिसाब है। और बेसिक नॉलेज लेने वाले आधारमूर्त ब्राह्मणों की दुनिया में भी साधारण और असाधारण ब्राह्मण आत्माएँ हैं। तो दोनों प्रकार की दुनिया के हिसाब से जो बाप के डायरैक्ट बनने वाले बच्चे हैं, वो कितनी साधारण आत्माएँ हैं। ये विशेष वंडर है कि वो माला के मणके बनने वाले इतनी साधारण आत्माएँ, जो विश्व में सितारे बन करके चमकेंगी, दुनिया की नज़रों में। विश्व के शिक्षक के स्टुडेंट देखो कैसे वंडरफुल हैं। पढ़ने वाला, पढ़ाने वाला दोनों ऊँच। पढ़ाने वाला ऊँचे ते ऊँचा। क्या? बच्चों की नज़र में; दुनिया वालों की नज़र में नहीं। पढ़ाने वाला ऊँचे ते ऊँचा और पढ़ने वाले साधारण; लेकिन साधारण ही साधारण स्वरूप में आने वाले बाप को जानते हैं। क्या? जो असाधारण हैं, बड़े आदमी बन गए दुनिया की नज़रों में। 'प्रभुता पाही काही मद नाईं।' अहंकार आ जाता है फिर वो साधारण रूप में आने वाले बाप को पहचान ही नहीं सकते। बापदादा भी वी.आई.पी. बनके तो नहीं आते हैं ना? ऐसे तो नहीं है कि ट्रेन में फर्स्ट क्लास का टिकट ले करके आते हों या जाते हों बच्चों से मिलने के लिए। थर्ड क्लास में, वो भी रिजर्वेशन नहीं, जनरल कम्पार्टमेंट में भीड़भाड़ के नीचे दब करके साधारण रूप में आते हैं। कोई प्राइमिनिस्टर वा किसी राजा के तन में नही आते हैं। अतिसाधारण तन में आते हैं; इसलिए पहचानने वाले साधारण ही, भाग्य प्राप्त कर लेते हैं।

खुशनसीब हो कितना भाग्य मिला है! पद्मापद्म कहना भी कुछ नहीं है। तो ऐसे हो ना? अभी देखो संख्या बहुत है ना। पहले सोचते थे ये इतना बड़ा हॉल किस काम में आवेगा! (किसी ने कुछ कहा– ...) पहले तो बना ही नही था, सोचेंगे कहाँ से। तुम जिसकी बात कर रहे हो। वो तो ओम्शांति भवन की बात अव्यक्त बापदादा ने की है कि पहले सोचते थे ये इतना बड़ा हॉल किस काम में आवेगा; तीन/चार हज़ार सीट वाला। और अभी क्या लगता है? अभी लगता है इससे भी बड़ा हॉल होना चाहिए। तो ब्राह्मणों को ये वरदान है जितना–2 बड़ा बनाते जायेंगे उतना छोटा होता जावेगा।

जो भी आए बापदादा सबको आने वालों को मुबारक देते हैं; लेकिन सिर्फ क्या नहीं करो? सिर्फ भावुक नहीं बनो। सिर्फ स्नेही नहीं बनो। भावना, दिल से ही स्नेह आता है। स्नेही सिर्फ बन गए और ज्ञानयुक्त स्नेही नहीं बने। तो सिर्फ भावुक नहीं बनो, ज्ञानी भी बनो। प्रकृति के भी ज्ञानी बनो। क्या? ज्ञानी माना? जड़ का भी ज्ञान हो तो चैतन्य का भी ज्ञान हो। प्रकृति क्या है? प्रकृति है जड़। और परमात्मा क्या है? चैतन्य। तो प्रकृति के भी ज्ञानी बनो और चैतन्य के भी ज्ञानी बनो। सिर्फ भावना में बहने की बात नहीं है। ज्ञान सिर्फ आत्मा का नहीं; लेकिन प्रकृति का भी ज्ञान हो; क्योंकि प्रकृति का ज्ञान नहीं होगा तो प्रकृति का परिवर्तन भी नहीं होगा और प्रकृति का परिवर्तन नहीं होगा तो विश्व का परिवर्तन भी नहीं होगा। तो आत्माओं के पारखी, परमात्मा के पारखी और प्रकृति के पारखी उसमें ड्रामा भी आ जाता है। किसमें? आत्मा परमात्मा उनका जो पार्ट नुँधा हुआ है प्रकृति के साथ, इन तीनों में ड्रामा भी आ जाता है। तीनों का ज्ञान चाहिए आत्मा का भी, परमात्मा का भी और ड्रामा का भी यानि प्रकृति का भी। उस ड्रामा में समय, काल, टाइम का जो चक्र है वो काल भी जड़ है। कालचक्र कोई चैतन्य नहीं है; क्योंकि काल चक्र को भी बदलने वाली कौन है? आत्मा। समय को परिवर्तन करने वाले कौन? समय तो जड़ है। जड़ समय को परिवर्तन करने वाली चैतन्य आत्मा है। तो तीनों का ज्ञान चाहिए।

कहाँ जा रहे हैं और क्या अपने लिए अटेंशन चाहिए। प्रकृति का भी अगर नॉलेज नहीं है तो नॉलेजफुल नहीं। स्थान का, व्यक्ति का, स्थिति का तीनों का ज्ञान रखो। सिर्फ भावुक नहीं बनो। जाना ही है लाना ही है। ज्ञान स्वरूप माना दुरंदेशी, त्रिकालदर्शी। तीनों का ज्ञान अगर स्पष्ट है– स्थान का व्यक्ति का और स्थिति का तीनों का ज्ञान रखो। ज्ञान स्वरूप माना दुरंदेशी, त्रिकालदर्शी। तीनों का ज्ञान अगर स्पष्ट है तो सफलता मिलती है। अगर तीनों का ज्ञान स्पष्ट नहीं है। किसका–2? स्थान, स्थिति और व्यक्ति का तो सफलता नहीं मिल सकती। अगर कोई अपनी गलती से बार–2 बीमार होता है। गलती हो जाती है, कोई न कोई अपथ्य हो जाता है या दवाई लेना भूल जाता है तो गलती तो अपनी हुई ना! तो बापदादा उसको ज्ञान–योगी नहीं कहते हैं। योगी हो सकता है; लेकिन ज्ञान–योगी नहीं। ज्ञान का अर्थ है– समझ। अपनी स्थिति को भी समझो। अपने शरीर को भी समझो। आत्मा की स्थिति, शरीर की स्थिति, वायुमण्डल का ज्ञान सब बुद्धि में हो तो नॉलेजफुल हुए। किसका–2 ज्ञान? अपना ज्ञान और शरीर का ज्ञान और वायुमण्डल की स्थिति का ज्ञान तो नॉलेजफुल होंगे। इसलिए सिर्फ भावना पर राज़ी नहीं हो जाओ।

आने वाले और लाने वाले; क्योंकि आने वालों की संख्या वृद्धि को पा गई और वृद्धि को ले आए तो लाने वाले कोई महान हैं ऐसा समझ लिया। आने वाले और लाने वाले दोनों को नॉलेजफुल होना चाहिए कि हम आए कहाँ हैं और किसको ले करके आए हैं? सिर्फ संख्या की वृद्धि ये कोई ज्ञानयुक्त आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा का काम नहीं है। जो होता है वो तो मीठा ड्रामा ही कहेंगे। ड्रामा में कुछ भी कडुवा तो है ही नहीं। तो ऐसे कहेंगे ना? हलचल में तो नहीं आएँगे ना? संख्या भी वृद्धि को हो जाए, क्वालिटी की आत्माएँ नहीं भी आएँ तो ऐसी आत्माओं को देख करके, उनके संसर्ग–सम्पर्क में आ करके हलचल में तो नहीं आ जाएँगे? कि हलचल में आ जाएँगे? ज्ञानी तू आत्माएँ तो हलचल में नहीं आ सकतीं; क्योंकि बुद्धि में ड्रामा बसा हुआ है, अचल। लेकिन आगे के लिए अटेंशन; क्योंकि बापदादा भी जानते

हैं कि बच्चे कितनी मेहनत सहन करके पहुँचते हैं। (किसी ने कहा– बाबा, वो मानकरके फिर आगे बढ़ जाते...) जो हुआ सो ड्रामा कल्याणकारी है। उसमें भी कुछ कल्याण समाया हुआ है जो अभी भल दिखाई न दे, समय पर प्रत्यक्ष हो जाएगा; लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि ऐसा ही करना है। तो बापदादा भी जानते हैं कि बच्चे कितनी मेहनत सहन करके पहुँचते हैं। आने वाले बच्चों को भी मेहनत तो ले आने वालों को भी कितनी मेहनत होती है। इसके लिए तो बापदादा ने मुबारक दी है।

जिस आत्मा का जो वर्सा है वो उसको प्राप्त होना ही है। क्या? जिस आत्मा का जो वर्सा है और जितना भी है वो उसको प्राप्त होना ही है। वर्से से वंचित कोई नहीं रह सकता। चाहे वह साकार में सन्मुख हैं। सन्मुख हैं साकार में? साकार का अर्थ तो वो लगा देंगे गुलज़ार दादी में जो बापदादा आते हैं वो ही साकार में सन्मुख हैं। लेकिन गुलज़ार दादी में जो बापदादा आते हैं वो तो आकारी अव्यक्त पार्ट है या व्यक्त पार्ट है? तो उसको साकार पार्ट कहेंगे? शरीर के अंदर तो आते हैं; लेकिन जिस शरीर के अंदर आते हैं वह शरीरधारी व्यक्त होता है या अव्यक्त होता है? ब्रह्मा के तन में आते थे तो ब्रह्मा का तन साकार होता था या अव्यक्त हो जाता था? साकार होता था। खुद भी वाणी सुनते थे। ब्रह्मा यानी दादा लेखराज की सोल गुम नहीं हो जाती थी। तो उसका नाम दिया साकार पार्ट। यहाँ तो जिस तन में प्रवेश करते वो आत्मा ही गुम हो जाती है। तो इससे साबित होता है कि प्रवेश करने वाली आत्मा सूक्ष्म शरीर का फोर्स लेकर के आने वाली मनुष्य आत्मा है। सूक्ष्मशरीर का फोर्स प्रवेश करने वाली मनुष्य आत्माओं को होता है। परमात्मा को सूक्ष्म शरीर होता ही नहीं। वो तो जब प्रवेश करता है तो हल्का–फुल्का, पता भी नहीं चलता देखने वालों को कि कब प्रवेश किया; कब चला गया। जिसमें प्रवेश करता है उसको ही पता नहीं चलता। इसलिए मुरली में बोला क्या? कि **"इस ब्रह्मा को पता चलता है? नहीं। मालूम भी नहीं पड़ता।"** किस समय की बात है? कौन–से सन् की बात है? 92 की बात है। तो चाहे साकार में सन्मुख हैं, तो ज़रूर कहीं साकार पार्टधारी परमपिता परमात्मा बापदादा भी मौजूद है। चाहे उसके सन्मुख हैं, चाहे अपने स्थान पर मनमनाभव हैं बुद्धियोग में; दोनों को वर्सा अवश्य प्राप्त होना है।

डबल नॉलेजफुल हो। आत्मा और प्रकृति का या सिर्फ आत्मा की मस्ती में रहते हो। हाफ नॉलेजफुल नहीं बनो। नॉलेजफुल माने आत्मा और आत्मा जिस तन के द्वारा कार्य करती है वो 5 तत्वों का पुतला, प्रकृति का श्रेष्ठ स्वरूप, प्रकृति का पुतला दोनों के नॉलेजफुल बनो। उस शरीर को कन्ट्रोल करने वाला सारथी आत्मा कौन है, उसके भी नॉलेजफुल और उस साधारण तन में पार्ट बजाने वाली आत्मा के भी नॉलेजफुल। और जो तमोप्रधान प्रकृति का चोला है, तमोप्रधान शरीर जिसमें परमात्मा प्रवेश करता है उसके भी नॉलेजफुल बनो। क्योंकि साधारण तन है तो कर्म भी कैसे करेंगे? साधारण कर्म ही करेंगे। तो हाफ नॉलेजफुल नहीं बनो। फुल बनो।

अच्छा। चारों ओर के सर्व खुशनसीब आत्माएँ, कैसी आत्माएँ? खुशनसीब। सर्व स्नेह और योगशक्ति की समानता की अनुभवी आत्माएँ। भावना और ज्ञान दोनों का स्वरूप धारण करने वाली आत्माएँ। सदा बापसमान बनने के लक्ष्य को पूर्ण करने वाली आत्माएँ। सदा समीप अनुभव करने वाली आत्माएँ। किसके समीप? बापदादा के अपने को समीप समझने वाली। बापदादा कौन? और सदा समीप कैसे समझेंगे? अगर बाप शिव ज्योतिबिंदु को कह दें और दादा ब्रह्मा को कह दें तो क्या सदा शब्द लगाया जा सकता है समीपता के लिए? क्योंकि 2500 वर्ष तो क्या 5000 वर्ष तो ज्योतिबिंदु शिव समीप होगा ही नहीं। तो सदा समीप अनुभव करने वाली कौन–सी आत्माएँ हुईं? बाप और दादा दोनों के प्रति? और बापदादा कौन हुए? (किसी ने कहा– प्रजापिता ब्रह्मा।) हाँ। राम और कृष्ण की आत्माएँ वो ही बाप और दादा का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ। यानि मनुष्यों का पिता, जिसकी पहचान ही तब होती है जब उसमें सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु प्रवेश करता है। नहीं तो उसका कोई अस्तित्व नहीं। उस प्रजापिता को कोई पहचान भी नहीं सकता। और दादा तो मनुष्यों का जो पिता है उसका पहला बच्चा। कौन? ब्रह्मा यानि कृष्ण की सोल, कृष्ण बच्चा। मनुष्यों के पिता के बाद वर्सा पाने वाली आत्माओं में सबसे पहली आत्मा कौन–सी? (किसी ने कहा– राम वाली आत्मा।) राम–कृष्ण वाली आत्मा! राम बाप को कहा जाता है वो राम तो अलग हुआ। वो तो मनुष्यों का पिता हुआ; लेकिन वर्सा प्राप्त करने वाले मनुष्यों में पहला कौन हुआ? कृष्ण की सोल, कृष्ण बच्चा। क्यों? बच्चों से पहले माँ नहीं होती है क्या? माँ जो बनाई जाती है वो बच्चों की सेवा के लिए बनाई जाती है। माँ और बाप दोनों ही किसलिए बने? बच्चों की सेवा के लिए माँ–बाप बने। तो अपनी सारी प्रॉपर्टी किसको देना है? बच्चे को।

तो सदा समीप अनुभव करने वाली आत्माएँ, किसके समीप? बापदादा के समीप अनुभव करने वाली। सदा माना? पहले जन्म से ले करके 84 जन्मों के अंत तक जो राम–कृष्ण जैसी आत्माओं के सदा साथ रहती हैं। तो जिन्होंने पहले पहचाना होगा वो सदा साथ रहेंगे या जिन्होंने पहचाना ही नहीं होगा, लास्ट में जा के पहचाना होगा, वो सदा साथ रहेंगी या पहचानने के बाद बीच में गोल हो गईं? हाँ, पहचाना और साथ–2 निभाना भी। ऐसे नहीं भावना में आ गए और पहचान लिया और ज्ञानयुक्त नहीं पहचाना। तो क्या होगा? माया के ठोकरों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे और कोई ऐसा भयंकर वातावरण बनेगा तो टूट जाएँगे। तो सदा समीप अनुभव करने वाली आत्माएँ। किसको सदा

समीप अनुभव करने वाली आत्माएँ? सिर्फ संगमयुग में सदा समीप आत्मा? 5000 वर्ष सदा समीप अनुभव करने वाली आत्माएँ। कोई ज़रूरी नहीं कि एक ही सम्बन्ध में। सर्व सम्बन्धों में। कभी कोई सम्बन्ध, कभी कोई सम्बन्ध।

ऐसे सदा अचल–अडोल रहने वाली विशेष आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते। कौन अचल और अडोल रहेंगे? बताया, जो पहले जन्म से लेकर के आखिरी जन्म तक बापदादा के साथ रहने वाली आत्माएँ रही हों। तो बापदादा के संग का रंग भी उन आत्माओं में समाया हुआ होगा। तो संगमयुग में भी वो आत्माएँ 84 जन्म या 63 जन्म समीप रहने के कारण राम–कृष्ण की आत्माओं को जल्दी पहचानेंगी और साथ भी निभाएँगी। सम्बन्ध जोड़ना सहज होता है; लेकिन निभाने में नंबर बनते हैं। तो ऐसी–2 आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते। याद प्यार और नमस्ते भी समीप वाली आत्माओं को। दूर वाली आत्माओं को नहीं। जिनकी ये–3 विशेषताएँ हैं।

आज मधुबन में आई हुई पार्टी में 12 घण्टे के अंदर कर्नाटक ज़ोन के दो बुज़ुर्ग भाइयों ने अपना पुराना शरीर छोड़ा है; इसलिए बापदादा ने सभी का विशेष अटेंशन खिंचवाया है। पुराना शरीर, वहाँ तो स्थूल शरीर की बात है, फिर यहाँ देहअभिमान के शरीर को छोड़ने की बात है। यहाँ कोई शरीर से मरने की बात (नहीं है)।

दादियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकातः– संगठन की शक्ति संगठन को आगे बढ़ा रही है। एक है संगठन को पीछे हटाना और एक है संगठन को आगे बढ़ाना। तो संगठन की शक्ति क्या? किन आत्माओं में होती है? संगठन की शक्ति का मूल आधार क्या है? प्योरिटी इज़ यूनिटी। प्योरिटी नहीं होगी तो यूनिटी भी नहीं। भल संन्यासियों वाली प्योरिटी ही क्यों न हो, है तो प्योरिटी। गृहस्थियों के मुकाबले तो ज़्यादा प्योरिटी रही, प्योरिटी तो है। लेकिन संन्यासियों वाली जो प्योरिटी है, उस संन्यासियों वाली प्योरिटी को राजयोगियों की जो प्योरिटी है–कीचड़ में रहते कमलफूल समान बनने की प्योरिटी–जब क्रॉस कर जाए तब संन्यासियों का संगठन टूट जाएगा। उनका संगठन फिर मुकाबला नहीं कर सकता। तो ज़रूर गृहस्थी आत्माएँ जो अभी बाप से राजयोग सीख रही हैं, वो अभी प्योरिटी के हिसाब से गिरी हुई हस्ती में हैं। गृहस्थी तो हैं; लेकिन हस्ती कैसी है? गिरी हुई हस्ती। तो संगठन की स्थिति भी गिरी हुई होगी। और घर गृहस्थ में रहते गृहस्थियों की प्योरिटी की पावर जब बढ़ जाएगी, तो माला भी बन करके तैयार हो जाएगी। तो अभी बात किससे हो रही है? दीदी, दादियों से।

वो दीदी–दादियाँ गृहस्थ में रहने वाली हैं या गृहस्थी जीवन से दूरबाज़–खुशबाज़ हैं? अलौकिक गृहस्थी नहीं हैं? अलौकिक माना सूक्ष्मवतन। सूक्ष्मवतन में तो फरिश्ते होते हैं। वहाँ तो फर्श की दुनिया वालों से कोई रिश्ते का सवाल ही नहीं। फरिश्ते तो पवित्र ही होते हैं; क्योंकि उनको स्थूल शरीर होता ही नहीं। तो बात कहाँ की है? इस साकार शरीर पर पार्ट बजाते हुए संगठन बनाने की बात है। सूक्ष्मवतन में संगठन नहीं बनेगा। संगठन कहाँ बनता है? इसी दुनिया में। तो यहाँ जो दीदी–दादियों को देखा जाए, उनको वास्तव में गृहस्थी कहें या संन्यासी कहें? (किसी ने कहा– संन्यासी।) क्यों? पति–पत्नी के सम्बन्ध में नहीं रहते हैं क्या? संन्यासी कभी पति–पत्नी के सम्बन्ध में नहीं रहते। मात–पिता के संबंध में नहीं रहते हैं क्या? मान लो कोई कुमार है, कुमारी है; पति–पत्नी नहीं हैं तो उनका क्या होना चाहिए? मात–पिता होना चाहिए। तो संन्यासियों का कोई मात–पिता, धनी–धौरी होता है क्या? दीदी–दादियों का कन्ट्रोल करने वाला कोई मात–पिता है प्रैक्टिकल में, साकार में? (किसी ने कहा– नहीं।) क्यों? दीदी–दादियों की बड़ी दादी जो है, वो मात–पिता नहीं है? तो संन्यासियों का कोई मात–पिता नहीं होता। संन्यासियों का पति–पत्नी सम्बंध भी प्रैक्टिकल में नहीं होता। तो जो खुद संन्यासी हैं निवृत्तिमार्ग में, वो निवृत्तिमार्ग की तो पवित्रता धारण कर सकते हैं, दूरबाज़–खुशबाज़ बन सकते हैं और जब तक उनकी वो प्योरिटी की स्टेज का पलड़ा भारी है तब तक उनकी यूनिटी भी देखने में ज़रूर आएगी। तो बोला– संगठन की शक्ति संगठन को आगे बढ़ा रही है। संगठन की शक्ति माना प्योरिटी की पावर। संगठन को आगे बढ़ा रही है।

अच्छी हिम्मत से एक दो को सहयोग देकर वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। कौन? दीदी–दादी। आप निमित्त बनी हुई आत्माओं की हिम्मत अनेक आत्माओं की हिम्मत को बढ़ाती है। क्या? संसार में भी गुरू लोग निमित्त बने ना। हिम्मत पूर्वक निमित्त बने ना। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट में अगर हिम्मत न होती तो निमित्त बन सकते थे क्या? तो आप निमित्त बनी हुई आत्माओं की हिम्मत अनेक आत्माओं की हिम्मत को बढ़ाती है। हर परिस्थिति के अनुभवी बन गए। नथिंग न्यु लगता है ना।

बापदादा परदे के अंदर सकाश दे रहे हैं; लेकिन पार्ट बजाने वाली स्टेज पर आप आत्माएँ हो। बापदादा पर्दे के अंदर सकाश दे रहे हैं। क्यों? पर्दे के अंदर क्यों? पर्दे के अंदर सकाश दे रहे हैं तो उनको डायरैक्ट बाप मिला क्या? पर्दा तो निकला नहीं। कोई न कोई पर्दा है लोक लाज का। अच्छा पार्ट बजाय रही हैं। बापदादा सदा महावीरों के निमित्त संगठन को विशेष अमृतवेले नंबरवन उन्हीं आत्माओं को याद प्यार गुडमॉर्निंग करते हैं और वही सकाश कहो, प्यार कहो सारे दिन की मुबारक हो जाती है। तो ऐसे लगता है ना? अच्छा, ठीक है सब? पूछा। सब माना? अंदर बाहर से सब ठीक लगता है? हिम्मत से सफलता है ही। जितनी हिम्मत रखेंगे 'हिम्मते बच्चे तो मददे बाप'। ओम्‌शांति।